ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

पाश्चात्य जगत पर जैन दर्शन का प्रभाव

डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज
प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, विभागजैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

डॉ. सब्यसाची सारंगी
प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, विभागजैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

जैनदर्शन समर्थ एवं प्रभावशाली दर्शन है। कोई भी दर्शन शक्तिशाली अथवा प्रभावशाली इसलिए नहीं बनता कि उसके अनुयायियों की संख्या अधिक है बल्कि प्रभावशाली बनने की कसौटी है, उस दर्शन के सिद्धान्तों ने जनमानस को कितना प्रभावित किया है। जैन–दर्शन के अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह जैसे सर्वमान्य सिद्धान्तों ने इसे सार्वभौम धर्म बनने के सामर्थ्य से युक्त बना दिया। पश्चिम की भोगवादी संस्कृति ने जहां आधुनिक मानव को अनेक प्रकार की सुख–सुविधाएं प्रदान की वहीं उसे तनाव, अवसाद जैसी मानसिक बीमारियों रूग्ण भी बना दिया। अंततः विश्व की सभी संस्कृतियों को अपनी ओर आकर्षित करने वाली पाश्चात्य संस्कृति भी जैन संस्कृति के संयम, त्याग, समता, करूणा जैसे मूल्यों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी।

प्रस्तुत लेख में उन मूल्यों एवं सिद्धानतों का पश्चिम में प्रचार–प्रसार कैसे हुआ इस वर्णन के साथ–साथ उन पश्चिमी व्यक्तियों का भी उल्लेख करने का प्रयास है जिनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व में जैनत्व मुखर है, जिन्होंने जैन–सिद्धान्तों को न केवल जीया है अपितु उसे जन–जन तक पहुंचाने का सफलतम प्रयास भी किया है अथवा कर रहे हैं।

जैन धर्म को पश्चिमी देशों में ले जाने का मुख्य श्रेय जाता है –वीरचंद गांधी को, जिन्होंने प्रथम बार 1893 में शिकांगों में आयोजित वर्ल्ड पार्ल्यामेण्ट ऑफ रिलिजियन्स में जैन दर्शन की प्रभावक प्रस्तुति देकर उत्तर अमेरिका तथा पूरे विश्व को जैनधर्म तथा दर्शन से परिचत कराया। विदेशी धरती पर जैन धर्म के नाम को ले जाने वाले विद्वानों की श्रृंखला में एक और महत्वपूर्ण व्यक्तित्व है –बैरिस्टर चम्पतराय जैन जिन्होंने इंग्लैण्ड की धरा पर जैन धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु महत्वपूर्ण कार्य किये।

पश्चिमी संस्कृति का जैन दर्शन एवं संस्कृति से परिचय कराने में बहुत बड़ा योगदान उन जैन अनुयायियों का भी है जो 20वीं सदी के प्रारंभ में ही व्यापार, आजीविका आदि हेतु पश्चिम देशों में जा बसें। वर्तमान में करीब 200,000 जैन धर्मानुयायी भारत से बाहर रहते हैं एवं उनमें से अधिकतम लोगों का निवास स्थान अमेरिका तथा यूरोप है। वहां भौतिकता प्रधान संस्कृति के बीच रहते हुए भी जैन धर्मानुयायियों ने त्याग प्रधान आध्यात्मिक जैन संस्कृति को न केवल सुरक्षित रखा अपितु संवर्द्धित भी किया, जिसका परिणाम है –विदेशी धरती पर भी अनेक जैन केन्द्रों एवं मंदिरों की स्थापना।[प]

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

अमेरिका में प्रतिवर्ष आयोजित जैन सम्मेलन (Jaina Convention) के कुछ कार्यक्रम में 5000 से भी अधिक जैन भाई–बहनों के साथ विदेशी लोगों की सहभागिता भी इस बात को प्रमाणित करती है कि वहां के लोग जैन संस्कृति से प्रभावित है। विदेशी लोगों का शाकाहार के प्रति निरन्तर बढ़ता आकर्षण भी यही सिद्ध करता है कि जैनदर्शन के आधारभूत सिद्धान्त अहिंसा से वहां का जनमानस प्रभावित है। सांख्यिकी के अनुसार वर्तमान में अमेरिका की करीब 7.3 मिलियन (73 लाख) जनता शाकाहारी है। वहीं अन्य 22.8 मिलियन (2 करोड 28 लाख) लोग ऐसे है जिनका कहना है कि उनका आहार शकाहार सम (Vegetarian inclined) है और एक मिलियन (10 लाख) लोग ऐसे है जिनकी जीवनशैली विगन (vegan) है।[पप] विगेन जीवनशैली का तात्पर्य है –शाकाहारी होने के साथ–साथ पशुओं के द्वारा उत्पादित (animal product) किसी भी वस्तु का उपयोग न करना।

संस्कृति का साहित्य के साथ महत्वपूर्ण संबंध है। पाश्चात्य संस्कृति पर जैन दर्शन के प्रभाव का एक कारण वहां के विद्वानों की जैन साहित्य के प्रति आस्था एवं रूचि भी है। अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने जैन साहित्य का गहन अध्ययन कर उसे आधुनिक स्वरूप में प्रस्तुत किया जिससे अन्य लोग भी इस समृद्ध साहित्य को पढ़ सके। जर्मनी के विद्वान हर्मन जेकोबी (1850–1937) ने चार आगम–ग्रन्थों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया जो "Saered Books of East" के नाम से विख्यात है। उनकी इस कृति ने अन्य अनेक विद्वानों जैसे Prof. Walther Schubring, Prof. Alsdorf Joseph, Norman Brown के भीतर भी जैन साहित्य एवं दर्शन को पढ़ने की जिज्ञासा पैदा की। Prof. Mausice Bllonfield, William Brown, Heinrich Zinned and Joseph Conpbell, A. Querinot आदि विद्वानों का भी जैन साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है। Mrs. Sindair Stevensor द्वारा लिखित "The Heart of Jainisom" एवं R. Williams द्वारा लिखित "Jain Yoga" ब्रिटिश विद्वानों के वैदुष्यपूर्ण प्रकाशन है।[पपप]

वर्तमान में ऐसे अनेक विदेशी है, जो जैनदर्शन के विस्तार में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं, जो इटली की प्रसिद्ध गायिका Dandia Pastoriono ने जैन दर्शन से सम्बन्धित अनेक पुस्तकों का इटालियन भाषा में अनुवाद किया है जिनमें से एक महत्वपूर्ण पुस्तक है –समण सुत्तं। वर्तमान में वे पुश–अधिकार एवं शाकाहर पर कार्य कर रही है। जर्मनी के Patrick Krueger, Ceatre of Jain Studies - Freie University (Berlin) के संस्थापक नया विभागाध्यक्ष है। शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से जैन धर्म–दर्शन के विस्तार के साथ–साथ सामान्य जनता के मध्य भी अहिंसा तथा जैन धर्म के सिद्धान्तों को फैलाने के लिए दृढ़ संकल्पित है। जर्मनी के Peter Finget भी लंदन में स्थित School of oriental and African Studies (SOAS) नामक विश्वविद्यालय में Report of the study of Religion के विभागाध्यक्ष है। और वहा जैन दर्शन के अध्यापन का कार्य भी करते हैं।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

French कहलाने वाले Pierre Amiel फ्रांस के निवृत Public Administrator है जिन्होंने 1998 में Lord Mahavira : Astudy in Historical Perspective का फ्रेंच भाषा मं अनुवद किया केनेडा के Dr. Robert नामक प्रसिद्ध विद्वान ने Moksha in Jainism, Jainism : Today and its Future आदि अनेक पुस्तकों को पश्चिमी जनता के सामने प्रस्तुत किया।[पअ]

फिल्म निर्माता, लेखक एवं पर्यावरण शास्त्री Dr. Michael Tobias ने ''अहिंसा'' पर एक ऐसी फिल्म बनायी जो अमेरिकन जनता के लिए प्रेरक बनी। इसके अलावा अन्य अनेक विदेशी विद्वान जिन्होंने जैन श्रावक का जीवन जीया है और कुछ तो ऐसे भी है जो वर्तमान में जैन श्रावक व्यक्तित्व की भूमिका में आते हैं – हर्बट वोरन इंग्लैण्ड के वे व्यक्ति है जिनकी 12 वृतों के प्रति गहरी आस्था थी और जिन्होंने पूर्ण श्रद्धा के साथ इन व्रतों का पालन किया। जर्मनी के Chrislzian और Carla एक ऐसा युगल है जो स्वयं का अपरिग्रह परिचय आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रदत्त नाम करूणा से ही देते हैं। उनका जीवन जैनधर्म के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित है और उन्होंने युगानुसार प्रचार–प्रसार का माध्यम बनाया है। इन्टरनेट को जिससे आज की युवा पीढ़ी जैन सिद्धान्तों को आसानी से जान सके।[अ] जर्मनी की Gabriel (गेब्रीयल) भी एक ऐसी महिला है जो जैन–धर्मानुयायियों के लिए भी आदर्श है। हिंसा के दोष से बचने हेतु स्थानान्तरण के लिए घास के उपर नहीं चलती, हवाई जहाज, कार, ट्रेन का उपयोग न कर साइकिल का उपयोग करती है।[अप] चाहे उसे लम्बा रास्ता ही तय क्यों न करना पड़े। पानी के उपर बने पूल का उपयोग नहीं करती क्योंकि उसका मानना है कि पूल पर से जाने से पानी के जीवों में भय पैदा होता है। आज पश्चिम में "Reverence for life" के सिद्धान्त का समर्थन हो रहा है। इसका कारण है, वहां की संस्कृति में भी अहिंसा के मूल्य को आंका जा रहा है।

जैन धर्म को विश्व के कोने–कोने तक पहुंचाने के लिए 20वीं शताब्दी में भारत प्रवासी अनेक जैन विद्वानों ने पश्चिमी देशों की यात्रा प्रारंभ की। इसी शताब्दी में एक क्रांतिकारी हुए –आचार्य तुलसी जैन धर्म की संयमप्रधान संस्कृति तथा सार्वभौमिक सिद्धान्तों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए 1980 में एक से पहचानी जाने लगी। समण श्रेणी के सदस्यों की विदेश यात्रा ने पश्चिम में बसने वाले पश्चिमी लोगों को भी वर्तमान समय में जैन दर्शन की प्रसंगिकता से परिचित कराया। गुरु के आशीर्वाद एवं समण श्रेणी के सदस्यों के सार्थक परिश्रम से मायामी के प्रसिद्ध फ्लोरिड़ा इन्टरनेशनल विश्वविद्यालय में भी जैन दर्शन एवं अहिंसा तथा ध्यान सम्बन्धित पाठ्यक्रमों का अध्यापन प्रारंभ हुआ और वर्तमान में प्रगतिशील है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पश्चिमी संस्कृति भौतिकता की दौड़ मे जितनी आगे बढ़ी, समस्याएं भी उतनी ही बढ़ती चली गई। आज पश्चिमी विचारकों द्वारा भी समाधान भोग व हिंसा में नहीं त्याग अथवा संयम और अहिंसा अथवा करूणा में ही खोजा जा रहा है। जिन पश्चिमी विद्वानों ने जैन–दर्शन के मूल को समझ लिया है, उनके द्वारा शोधपरक साहित्य सामग्री प्रस्तुत की जा रही है, जो भविष्य में पश्चिमी लोगों का जैन दर्शन व संस्कृति के प्रति आकर्षण बढ़ाने में सहयोगी बन

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

सकेगी। अनेक विदेशी विश्वविद्यालयों में[अपप] जैन दर्शन का अध्यापन तथा जैन सिद्धान्तों पर शोध होना वहां पर जैन दर्शन के विस्तार एवं प्रभाव का महत्त्वपूर्ण माध्यम बन रहा है।

सन्दर्भ–सूची

[i]. Jain Temple of Leicester, Potteobar in U.K., Siddhadalan in New Jersey, Jain Temple of Beegiven etc.

[ii]. www.vegetariantimes.com

[iii]. Shah, Natukhai, Jainism : the world of Conquerors, succec Academic Press, Brigheon, great britain, 1998, pp. 255,256

[iv]. jainismus.hubpages.com (Artizle-Jainism : An Inbroduetion to some western Jains by mahavir sangwkar)

[v]. www.herenow4unet

[vi]. Acharya Mahapragya, Training in Nonviolence : Theory and practice, ed. by S.L. Gandhi, Anuwrat Global Organization, 2009, p.21

[vii]. Jain Satish Kumar and K.C. Sogani (editor), Perspectives in Jain Philosophy and culture Ahimsa International, New Delhi, 1985, pp. 68-70. (Jain centre for studies at SOAS in London, Birnigham and demoulford Universities in UK Harvard University in USA, Antwerg University in Belgium.
Hawaian University etc.)